



पत्रलेखनम्

(क) अनौपचारिकम् पत्रम्

| 1. | चोरितस्य स्यूतस्य प्राथमिक-सूचनार्थम् आरक्ष्यधिकारिणं प्रति पत्रं लिखत |
|----|------------------------------------------------------------------------|
| | आरक्ष्यधिकारि-महोदय! |

लाजपतनगर-क्षेत्रम्

नवदेहली

विषय: चोरितस्य स्यूतस्य प्राथमिक-सूचना।

श्रीमन्,

सधन्यवादम

अनेन पत्रेण अहं भवते एतत् सूचयामि यत् ह्यः प्रातः एकादश-वादने रेलमैट्रोयानेन विश्वविद्यालयात् अहं लाजपतनगरम् अगच्छम्। मार्गे मम स्यूतं चोरितम् अभवत्। यस्मिन् द्विसहस्रं रूप्यकाणि, कार्यालयस्य परिचय-पत्रं, मैट्रोचिटिकापत्रं मम आधार-परिचयपत्रं चासन्। स्यूतस्य वर्णः कृष्णः आसीत्। अहं प्रार्थये यत् यथाशीघ्रं मम स्यूतम् अन्वेष्य मां कृतार्थं करोतु भवान्।

| निवेदक: | |
|-----------------|--|
| अजय: | |
| निवासस्थानम् – | |
| दूरभाष-संख्या – | |
| दिनाङ्क: | |

| ••••• | | | | |
|-----------|-------|--------|-------|-------|
| | | | | |
| ••••• | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| ••••• | | | | |
| | | | | ••••• |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | ••••• | ••••• | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | ••••• |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | ••••• | ••••• |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | •••••• | | ••••• |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| | | | | |
| ••••• | | | | |
| | | | | |
| | | | | |

Males



(ख) औपचारिकम् पत्रम्

1. विज्ञानविषयं प्राप्तुं प्राधानाचार्यं प्रति आवेदनपत्रम्।

सेवायाम् प्रधानाचार्यमहोदय! मीमांसाविद्यालय:, नवदेहली विषय:- एकादशकक्षायां विज्ञानविषयग्रहणार्थं विशेषानुमतये निवेदनम्। महोदय.

सविनयं निवेद्यते यदहमस्मिन् विद्यालये प्रथमकक्षातः पठामि। प्रतिवर्षमहम् उत्तमान् अङ्कान् प्राप्य कक्षायां प्रथमस्थानमेव अधिगच्छामि स्म। परमस्मिन् वर्षे परीक्षामध्ये एवाहम् अकस्मात् ज्वरग्रस्तः अभवम्। विज्ञानविषयस्य तु परीक्षाऽपि मया चिकित्सालयात् एव परीक्षाकेन्द्रं प्राप्य प्रदत्ता। फलतः मया आशानुकूलः परीक्षापरिणामः न प्राप्तः। विद्यालयनियमानुसारं विज्ञानविषय-ग्रहणाय प्रतिशतं केवलम् एकस्य एव अङ्कस्य न्यूनता अस्ति।

महोदय! शैशवादेव मम हार्दिकी इच्छा जीवविज्ञाने शोधं कृत्वा वैज्ञानिक: भिवतुमासीत्। परं यदि अहं विज्ञानिवषये प्रवेशमेव प्राप्तुमसमर्थ: भिवष्यामि तदा कथमहं स्वकीयं स्वप्नं सार्थकारं किरष्यामि। अत: मम करबद्ध: अनुरोध: अस्ति। यन्मह्यं विज्ञानिवषयं पठितुम् भवान् अनुमितं प्रयच्छतु। एतदर्थम् अहं पुन: परीक्षणाय अपि सज्ज: अस्मि।

आशासे यत् भवान् मम स्थितिमवगत्य मम विशेषानुरोधं स्वीकरिष्यति। कृपाकाङ्क्षी भवदाज्ञाकारी शिष्य:

 अध्ययनं प्रति मातरं समाश्वासियतुं पुत्र्या लिखितं पत्रं मञ्जूषायां प्रदत्तपदैः पूरियत्वा पुनः लिखत—

कुशलम्, प्रतियोगिता:, कुशलिनी, परिणाम:, चिन्तिता, मितम्, आनन्देन, करणीया, खेलप्रतियोगितासु, काल:

| ख | लिप्रतियोगितासु, काल: | | |
|-------|------------------------------------|----------------------|------------|
| | | परीक्षाभव | त्रनत: |
| | | दिनाङ्क: | |
| पूज्य | ामातृचरणाः, | | |
| प्रणत | तीनां शतम्। | | |
| | अत्र अहं। आशासे भवती | • | |
| अहं | जानामि यद् भवती मम अर्धवार्षिक-परी | क्षापरिणामकारणात् | अस्ति। |
| | | | |

अभ्यासवान् भव — दशमकक्षायाः

3.

| अत्र चिन्ता न एका । प्रथमसत्रे तु अहं एता आसम्। पठनाय तु |
|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| एव न आसीत् परम् अधुना तु सर्वाः |
| समाप्ता:। अद्यारभ्य अहं केवलं पठने एव ————विधास्यामि। आशासे |
| वार्षिकपरीक्षायां मम भवताम् आशानुकूलः भविष्यति। शेषं |
| सर्वंभवत्याः चरणयोः प्रणामाः |
| भवत्याः पुत्री |
| सुकन्या |
| जलसंरक्षणस्य महत्त्वं वर्णयन्तः मित्रं प्रति लिखितं पत्रं मञ्जूषायां प्रदत्तपदैः |
| पूरियत्वा पुन: लिखत— |
| देशस्य, प्रयतमानाः, अपव्ययम्, विचारयति, जागरूकता, प्रयासः, जानीमः, |
| जीवनम्, सह, अस्तु |
| छात्रावासत: |
| छात्रापासतः दिनाङ्क: |
| प्रिय मित्र! |
| सप्रेम नमो नम:, |
| |
| अत्र कुशलं तत्र """। भवतः पत्रं पठित्वा अतीव प्रसन्नताम् अनुभवामि यत् भवान् मित्रैः "" जलसंरक्षणप्रचारकार्ये रतोऽस्ति। एषः |
| |
| |
| तु उत्तमः अस्ति। वयं सर्वे एव यत् जीवने जलस्य महत्त्वं |
| |
| तु उत्तमः अस्ति। वयं सर्वे एव यत् जीवने जलस्य महत्त्वं |
| तु उत्तमः ———— अस्ति। वयं सर्वे एव ————यत् जीवने जलस्य महत्त्वं तु अतुलनीयम्। जलम् एव ———— इति वयं सर्वे जानीमः परं पुनरिप वयम् |
| तु उत्तमः अस्ति। वयं सर्वे एव यत् जीवने जलस्य महत्त्वं तु अतुलनीयम्। जलम् एव इति वयं सर्वे जानीमः परं पुनरिप वयम् अस्य कुर्मः। अनेन आगामिकाले कियम् भीषणं जलसङ्कटं भवेत् इति |
| तु उत्तमः अस्ति। वयं सर्वे एव यत् जीवने जलस्य महत्त्वं तु अतुलनीयम्। जलम् एव इति वयं सर्वे जानीमः परं पुनरिप वयम् अस्य कुर्मः। अनेन आगामिकाले कियम् भीषणं जलसङ्कटं भवेत् इति कोऽपि न । जलसंरक्षणार्थं अनिवार्या एव। यदि जनाः अत्र |
| तु उत्तमः अस्ति। वयं सर्वे एव यत् जीवने जलस्य महत्त्वं तु अतुलनीयम्। जलम् एव इति वयं सर्वे जानीमः परं पुनरिप वयम् अस्य कुर्मः। अनेन आगामिकाले कियम् भीषणं जलसङ्कटं भवेत् इति कोऽिप न । जलसंरक्षणार्थं अनिवार्या एव। यदि जनाः अत्र ध्यानं न दास्यन्ति तदा अस्माकं स्थितिरिप अफ्रीकादेशवत् भविष्यति। |
| तु उत्तमः अस्ति। वयं सर्वे एव यत् जीवने जलस्य महत्त्वं तु अतुलनीयम्। जलम् एव इति वयं सर्वे जानीमः परं पुनरिप वयम् अस्य कुर्मः। अनेन आगामिकाले कियम् भीषणं जलसङ्कटं भवेत् इति कोऽपि न । जलसंरक्षणार्थं अनिवार्या एव। यदि जनाः अत्र ध्यानं न दास्यन्ति तदा अस्माकं स्थितिरिप अफ्रीकादेशवत् भविष्यति। यथा ते जलबिन्दुप्राप्त्यर्थं सन्ति तथा एव अस्माकं देशस्य अपि स्थितिः |
| तु उत्तमः अस्ति। वयं सर्वे एव यत् जीवने जलस्य महत्त्वं तु अतुलनीयम्। जलम् एव इति वयं सर्वे जानीमः परं पुनरिप वयम् अस्य कुर्मः। अनेन आगामिकाले कियम् भीषणं जलसङ्कटं भवेत् इति कोऽिप न जलसंरक्षणार्थं अनिवार्या एव। यदि जनाः अत्र ध्यानं न दास्यन्ति तदा अस्माकं स्थितिरिप अफ्रीकादेशवत् भविष्यति। यथा ते जलिबन्दुप्राप्त्यर्थं सन्ति तथा एव अस्माकं देशस्य अपि स्थितिः भविष्यति। अतः जलसंरक्षणार्थं जागरूकता अनिवार्या। शेषं सर्वं कुशलम्। पितृभ्यां |

1



4. स्वस्थभोजनस्य महत्त्वं वर्णयन्त्याः अग्रजायाः अनुजं प्रति पत्रम्।

प्रिय अमित!

सप्रेम नमो नम:।

माता लिखितं पत्रं प्राप्तम्। तेन पत्रेण मया ज्ञातम् यत् भवान् सन्तुलितभोजनं न सेवते, प्रतिदिनं च 'चाऊमीन-बर्गर' इति खादित। ईदृशं भोजनं स्वास्थ्याय सम्यक् न अस्ति। कदाचित् तु अस्य सेवनं कर्त्तुं शक्यते परं प्रतिदिनं त्विरतभोजनस्य सेवनं स्वास्थ्याय हानिकरम्।

स्वास्थ्याय तु सन्तुलितभोजनं ग्रहीतव्यम् एव यतः 'स्वस्थशारीरे एव स्वस्थमनसः वासः' भवति अतः भवान् त्वरितभोजनस्य सेवनं मा करोतु। स्वास्थ्यवर्धकभोजनमेव खादतु। अनेन भवान् कदापि रुग्णः न भविष्यति। भवान् स्वस्वास्थ्यविषये जागरूकः तिष्ठतु इति मे अनुरोधः।

भवत: अग्रजा अमिता

5. सन्तुलितभोजनमेव सेवनीयम् इति वर्णयतः अग्रजस्य अनुजां प्रति पत्रम् लिखत—

| | | परिक्षाभवनतः |
|---------------|--------|--------------|
| | | 6 |
| | | दिनाङ्क: |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | ••••• |
| | | |
| | | |
| | | |
| | •••••• | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| भवत: अग्रज: | | |
| i iste tet te | | |
| | | |

| | 6. | प्रातयागपराक्षाथं सन्नद्धाकरणायं आरम्भतः एव स करणीयः इति उपदिशतः पितुः पुत्रं प्रति पत्रम्। | तमान्यज्ञानस्य अभ्यास <u>ः</u> |
|-------|-----|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| | | | जयपुरत: |
| | | | ु दिनाङ्क: |
| | | प्रिय पुत्र अविनाश! शुभाशिषो लसन्तु। आशासे त्वं सकुशल: स्वाध्याये रत: असि। पुत्र! अहं ज शोभना भवति। त्वं प्रतिवर्षं कक्षायां प्रथमं स्थानं प्राप्नोषि इति त्वं कथितवान् यत् तव लक्ष्यं प्रतियोगिपरीक्षामृत्तीर्य स सेवाप्रदानम् अस्ति। पुत्र! एतल्लक्ष्यं प्राप्तुं बाल्यकालादेव करणीयम्। अत एव विषयस्य अभ्यासेन समम् एकहोराप प्रतिदिनं सामाचारपत्रं पठ तदा यदि अधुनात: एतल्लक्ष्यं करिष्यसि नूनमेव साफल्यं लप्स्यसे। यदि काऽपि सहाय | ानामि परीक्षायां तव प्रस्तुति: अहं जानामि। ग्रीष्मावकाशे ।ङ्घलोकसेवा - आयोगक्षेत्रे त्र सामान्यज्ञानस्य अध्ययनं ।र्यन्तं सामान्यज्ञानं वर्धयितुं प्राप्तुं नियमितम् अध्ययनं |
| | | करिष्यामि। | |
| | | तव जनक: | |
| | | आशीषकुमार: | |
| | 7. | जीवने सफलतां लब्धुं परिश्रमस्य महत्त्वं वर्णयन्त्या पूरयत— | : मातु: पुत्रीं प्रति पत्रम् |
| | | | कानपुरत: |
| | | | दिनाङ्कः |
| | | प्रिय पुत्रि! | ापनात्क. |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| 21 | | | |
| All (| | | |
| | | | |
| | | | |
| -01 | | तव जननी | |
| all | | सुधा | |
| 16 | , , | | |
| IN | 1/2 | | |



पत्रलेखनम्

| 'पुत्रीं रक्ष पुत्रीं पाठय' इति अ | भियानं कथं सार्थकं भविष्यतीति स्व |
|-------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------|
| | भियानं कथं सार्थकं भविष्यतीति स्वर्ग ·— |
| 'पुत्रीं रक्ष पुत्रीं पाठय' इति अ | भियानं कथं सार्थकं भविष्यतीति स्व :— |
| 'पुत्रीं रक्ष पुत्रीं पाठय' इति अ | भियानं कथं सार्थकं भविष्यतीति स्व :— |
| 'पुत्रीं रक्ष पुत्रीं पाठय' इति अ | भियानं कथं सार्थकं भविष्यतीति स्वर्ग |
| 'पुत्रीं रक्ष पुत्रीं पाठय' इति अ | भियानं कथं सार्थकं भविष्यतीति स्व :— |
| 'पुत्रीं रक्ष पुत्रीं पाठय' इति अ | भियानं कथं सार्थकं भविष्यतीति स्व :— |
| 'पुत्रीं रक्ष पुत्रीं पाठय' इति अ | भियानं कथं सार्थकं भविष्यतीति स्व :— |
| 'पुत्रीं रक्ष पुत्रीं पाठय' इति अ | भियानं कथं सार्थकं भविष्यतीति स्व |
| 'पुत्रीं रक्ष पुत्रीं पाठय' इति अ प्रकटयन्तः मित्रं प्रति पत्रं लिखत | |
| 'पुत्रीं रक्ष पुत्रीं पाठय' इति अ | |
| 'पुत्रीं रक्ष पुत्रीं पाठय' इति अ प्रकटयन्तः मित्रं प्रति पत्रं लिखत | |
| 'पुत्रीं रक्ष पुत्रीं पाठय' इति अ प्रकटयन्तः मित्रं प्रति पत्रं लिखत | |
| 'पुत्रीं रक्ष पुत्रीं पाठय' इति अ प्रकटयन्तः मित्रं प्रति पत्रं लिखत | |
| 'पुत्रीं रक्ष पुत्रीं पाठय' इति अ प्रकटयन्तः मित्रं प्रति पत्रं लिखत | |
| 'पुत्रीं रक्ष पुत्रीं पाठय' इति अ प्रकटयन्तः मित्रं प्रति पत्रं लिखत | |
| 'पुत्रीं रक्ष पुत्रीं पाठय' इति अ प्रकटयन्तः मित्रं प्रति पत्रं लिखत | |